वार्तालाप नं. 532, टी.पी.जी (आं.प्र.), ताः 11.3.08
Disc.CD No.532, dt. 11.3.08, Tadepalligudem (Andhra Pradesh)

जिज्ञासू – बाबा, एडवान्स बीजरूप आत्माओं की दुनियाँ है ना।
बाबा – हाँ। नम्बरवार बीजरूप आत्माओं की दुनियाँ माना एडवान्स पार्टी।
जिज्ञासू – जो भी धर्म पितायें हैं वो सब बीजरूप दुनियाँ से ही आते हैं या?
बाबा – नहीं। धर्म पितायें जो हैं असली, जैसे परमात्मा बाप इस सृष्टि पर आते हैं। तो उसमें असली बाप कौन है? बेहद के दो बाप हैं। उसमें असली बाप कौन है और वास्तव में जो नकली है। कभी कोई रूप, कभी कोई रूप धारण करता है। वो कौन है? हैं तो दो बेहद के बाप।

Student: Baba, the advance [party] is the world of the seed form souls, isn't it?
Baba: Yes, the world of numberwise seed-form souls means advance party.
Student: Do all the religious fathers come from the seed-form world only?
Baba: No. The true religious fathers… for example, the Supreme Soul Father comes in this world; so, who is the true Father between them? There are two fathers in an unlimited sense. Who is the true Father between them and actually, the one who is false…., who assumes different forms at different times, who is he? There are indeed two fathers in an unlimited sense.

जिज्ञासू – असली बाप परमपिता शिव है।
बाबा – असली बाप परमपिता शिव है जो कभी रूप बदलता नहीं। और जिसमें प्रवेश करता है। वो रूप बदल जाता है। ऐसे ही ऊपर से आने वाली आत्मायें जो परमधाम से डायरेक्ट इस सृष्टि पर उतरती है, वो अपना रूप कभी नहीं बदलती। वो क्रिश्चियन से बदलकर कभी देवता नहीं बनेगी। चाहे इब्राहिम हो, बुद्ध हो, क्राइस्ट हो, गुरूनानक हो। वो कभी कनवर्ट नहीं होते। और उनके जो पक्के फॉलोवर्स होंगे वो भी कनवर्ट कभी नहीं होंगे। हाँ वो जिनमें प्रवेश करते हैं, वो कनवर्ट हो जाते हैं। तो उन कनवर्ट होने वालों के फॉलोवर्स भी होंगे। वो भी कनवर्ट हो जाते हैं।

Student: The true father is the Supreme Father Shiv.
Baba: The true father is the Supreme Father Shiv who never changes His form. And the one in whom He enters changes his form. Similar is the case with the souls that come from above; which descend directly from the Supreme Abode *(Paramdham)* to this world; they never change their form. They will never transform from Christians to deities. Whether it is Abraham, Buddha, Christ, Guru Nanak, they never convert. And those who are their firm followers, they will never convert either. Yes, the ones in whom they enter, convert. So, there will be followers of those who convert as well. They too convert.

जिज्ञासू – जो बीजरूप यहाँ होते हैं ना वो सब पुरूष तन के ही होते हैं या स्त्री तन का भी होता है?
बाबा – बीजरूप से कनेक्शन स्त्री पुरूष का नहीं है। जगदम्बा है। रूद्रमाला का बीज है। स्त्री चोला है; लेकिन स्वभाव संस्कार पुरूष का है। कोई जगदम्बा को कन्ट्रोल करना चाहे जीवन भर के लिए। ये कतई सम्भव ही नहीं।

Student: The seed-form that are present here, are they only in male bodies or are they present in female bodies also?
Baba: (The fact of being) Seed-form is not connected with female or male. There is *Jagdamba* (world mother). She is a seed in the *Rudramala* (the rosary of *Rudra*). The body is of a female, but the nature and *sanskars* are of a male. If someone wants to control *Jagdamba* for the entire life, it is not at all possible.

समय – 6.12
जिज्ञासू – याद से इन्द्रियाँ शीतल बनती है। मुरली प्वाइंट है। तो इन्द्रियों में खास इन्द्रिय है कामेन्द्रिय । बर्फ की जो लिंग दिखाते हैं ना। वो उसका यादगार है ना। बाप के समान भी कुछ आत्मोयें बनती हैं। माना इन्द्रियाँ.....
Time: 6.12
Student: Organs become cool through remembrance. It is a *Murli* point. So, among the organs, the main organ is the organ of lust. A *ling* made up of ice that is shown is its memorial, isn't it? Some souls also become equal to the Father. I mean to say the organs….

बाबा – और कोई देवता का कामेन्द्रिय नहीं पूजी जाती। माना कोई भी देव आत्मा इस स्टेज पर नहीं पहुँचती है जो 100 पर्सेन्ट कामेन्द्रिय को जीत पाए। ये एक ही आत्मा का गायन है, जिसमें परमपिता परमात्मा शिव प्रवेश करते हैं मुकर्रर रूप से। प्रवेश तो औरों में भी प्रवेश करते हैं। ब्रह्मा अनेकों के नाम हैं। जिस तन में भी प्रवेश करूँगा उसका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। लेकिन मुकर्रर रथ एक ही है। वो मुकर्रर रथ धारी जो नाम रूप धारी आत्मा है। वो कामेन्द्रिय पर 100 पर्सेन्ट जीत पाती है। इसलिए एक का ही गायन देवता का है अमोघवीर्य। और देवताओं का ये गायन नहीं है।
Baba: The organ of lust of no other deity is worshipped. It means that no deity soul reaches this stage to conquer the organ of lust 100 percent. It is the glory of only one soul, in whom the Supreme Father Supreme Soul Shiv enters in an appointed form. He enters in others as well. Many souls have the name Brahma. Whichever body I enter, will have to be named as Brahma. But there is only one appointed chariot. That appointed chariot, that soul with a name and form gains 100 percent victory over the organ of lust. This is why only one deity is praised as being *Amoghveerya* (the one whose vigour does not drain down) . It is not the praise of the other deities.

बाकी ये बात नहीं है कि ज्ञान में आने से ही कोई अमोघवीर्य हो जाए। उस मुकर्रर रथ धारी को भी राजयोग की प्रैक्टिस करनी पड़ती है। बाप की याद में रहते, उठते ये प्रैक्टिस जब तक पक्की नहीं होगी तब तक उसकी प्रत्यक्षता भी नहीं होगी। प्रत्यक्षता कब तक के लिए रूकी हुई है? जब तक वो कृष्ण वाली सोल जो जन्म–मरण के चक्र में आने वाली है और अपने को ही शिवोहम भगवान समझती है, वो जब तक आधीन न हो जाए। किसके आधीन? राम वाली आत्मा के आधीन न हो जाए । क्योंकि वो है हिरोईन का पार्ट। कौनसा? कृष्ण वाली आत्मा का, ब्रह्मा। वास्तव में ये ब्रह्मा तुम्हारी जगदम्बा है। सारा पार्ट बजाने वाली और कौन है माता का? जगदम्बा। तो वो ब्रह्मा की सोल ही कलियुग के अंत में जब तक फुल कन्ट्रोल में न आ जाए। तब तक नहीं कहेंगे कि राम का राज्य सीता के ऊपर हो गया।
And as for the rest, it is not that someone becomes *amoghveerya* just by coming in knowledge. Even that appointed chariot has to practice *Rajyog*. Until that practice does not become firm while being in the Father's remembrance, while sitting [and standing] he will not be revealed either. Until when is the revelation held up? Until that soul of Krishna, which passes through the cycle of birth and death, and considers itself to be *Shivoham* (I am Shiv) God, comes under control; under whose control? Until it comes under the control of the soul of Ram…. because, his part is that of a heroine. Which part? The part of the soul of Krishna i.e. Brahma. Actually, this Brahma is your *Jagdamba*. Who else plays the entire role of a mother? *Jagdamba*. So, until the same soul of Brahma comes under full control (of the soul of Ram) in the end of the Iron Age, it cannot be said that Sita has come under Ram's rule.

अव्वल नम्बर सीता कौन है? जगदम्बा। और जगदम्बा भी अव्वल नम्बर कौन? ब्रह्मा या स्त्री चोला धारी? ब्रह्मा। उस एक आत्मा के ऊपर सारा मदार है। तो जब तक उस बैल के ऊपर

सवारी नहीं होती है शंकर की। तब तक नहीं कहेंगे कि काम जीते जगत जीत बन गया। काम जीते जगत जीत की निशानी ही ये है, जो आत्मा सामने आवे वो ही कनवर्ट हो जावे। जैसे नेहरूजी के सामने जो जाते थे वो सर झुका देते थे। उनकी बातों को मान लेते थे। पीछे से भल कोई कितना भी विरोध करने वाला हो कि नेहरूजी ऐसा है, नेहरूजी ऐसे कहता है। ऐसे करता है। वैसा करता है। जब सामने जाते तो नतमस्तक हो जाते। तो ये निशानी है पावरफुल वाईब्रेशन की। ऐसे पावरफुल वाईब्रेशन से नई सृष्टि का जन्म होगा। सृष्टि के पहले पत्ते कृष्ण का जन्म होगा।

Who is the number one Sita? *Jagdamba.* And who is the number one *Jagdamba*? Is it Brahma or the one with a female body? Brahma. Everything depends on that one soul. So, until Shankar rides on that bull, it cannot be said that he has become victorious over the world by gaining victory over lust. The indication of becoming victorious over the world by gaining victory over lust is: whichever soul comes in front of you should convert. For example, whoever used to go in front of Nehruji, used to bow before him. They used to accept his versions. Howevermuch someone may oppose him at his back (saying:) 'Nehruji is like this; Nehruji says this, does like this, does like that'. When they go in front of him, they used to bow before him. So, this is the indication of powerful vibration. The new world will be born through such powerful vibrations; the first leaf of the world, i.e. Krishna will be born.

समय – 10.52
जिज्ञासू – पूरा याद में जिस इन्द्रियों से काम करते हैं वो इन्द्रियाँ पूजी जाती है ना।
बाबा – इन्द्रियाँ तब ही पूजी जावेंगी जबकि सौ परसेन्ट पवित्रता समाई होगी। इसलिए देवताओं के इन्द्रियाँ का गायन चलता है, कमल नयन, कमल नेत्र, कमल मुख, कमल हस्त, कमल पाद। माने हाथ–पाँव से भी कोई ऐसे कर्म न हो जो किसी को दुख महसूस हो जाए। हाथ–पाँव जैसी कर्मेन्द्रियाँ भी सुख देने वाली हों। कोई को दुख देने वाली न हो।

Time: 10.52
Student: The organs through which one works in complete remembrance are worshipped, aren't they?
Baba: Organs will be worshipped only when there is hundred percent purity in them. That is why the organs of the deities are glorified (as) lotus-like eyes, lotus-like face, lotus-like hands, lotus-like feet. It means that no action should be peformed even through the hands and legs which causes sorrow to anyone. Even the organs like hands and legs should give happiness. They should not bring sorrow to anyone.

जिज्ञासू – बाबा, यहाँ ये लिंग रूप पूजी जाती है माना वो सौ परसेन्ट याद में रहकर वो कर्म किया। वो कामेन्द्रिय से।
बाबा – हांजी।
जिज्ञासू – और वो एक ही होते है।
बाबा – और उसकी निशानी ये होगी, नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। नहीं तो जिन इन्द्रियों से जो लगाव पूर्वक सुख भोगा जाता है, वो सुख याद जरूर आता है। और वो सुख याद आएगा तो पतन पने में ले जाएगा। पतित जरूर बनेगा। बुद्धि गढ्ढे में जरूर जाएगी। कैलाशवासी नहीं हो सकता फिर।

Student: Baba, here this *ling*-form is worshipped. It means that the act was performed through that organ of lust while in hundred percent remembrance.
Baba: Yes.
Student: And he is only one.
Baba: And its indication will be *nashtomoha smritilabdha* (victory over attachment and regaining remembrance) Otherwise, the pleasure which is experienced through whichever

organs with attachment, that pleasure definitely comes to the mind. And if that pleasure comes in our thoughts, it will definitely take us towards downfall. He will definitely become sinful. The intellect will certainly fall in the pit. Then, he cannot become a resident of Mt. *Kailash*.

समय – 12.44
जिज्ञासू – बाबा बाप का वायदा है कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ ले जाऊँगा। फिर बाबा ने ससुर घर भेज देता हूँ ऐसे क्यों कहा?
बाबा – कहने वाली जो आत्मा है वो सुप्रीम सोल है। वो सुप्रीम सोल साक्षी होकरे बैठता है। और जो साथी हो जाता है वो है शिवबाबा। तो शिवबाबा तो साथ ही ल जावेगा। इस सृष्टि पर सदा कायम कौन है? शिवबाबा या शिव बाप?
जिज्ञासू – शिवबाबा।
Time: 12.44
Student: Baba, it is the Father's promise: we will remain together, go together; I will take you with Me. Then why did Baba say, I **send** you to the house of the father-in-law *(sasur ghar)*?
Baba: The soul that speaks is the Supreme Soul. That Supreme Soul sits like a detached observer. And the one who becomes companion is Shivbaba. So, Shivbaba will definitely take you along with him. Who is permanent in this world? Is it Shivbaba or the Father Shiv?
Student: Shivbaba.

बाबा – शिवबाबा साथ ले जावेंगे। और शिव बाप साक्षी हो जावेंगे।
जिज्ञासू – तो सूक्ष्म रूप में शिवबाबा।
बाबा – हाँ जी, हाँ जी। वो खुद ही ससुर है। अरे! घर जो बनाया जाता है वो ससुर बनाता है बहु–बेटों के लिए या बनाने वाला कोई और होता है? ससुर ही घर बनाता है। तो नई दुनियाँ बनाने वाला कौन प्रैक्टिकल में? रचयिता कौन? रचयिता सुप्रीम सोल ज्योति बिन्दु को थोड़े ही कहेंगे। रचयिता तो साकार होना चाहिए।
Baba: Shivbaba will take us along with him. And the Father Shiv will become a detached observer (*saakshi*).
Student: So, (it is) Shivbaba in a subtle form.
Baba: Yes, yes. He himself is the Father-in-law. *Arey*! Does the Father-in-law build a house for the daughters-in-law and sons or is it anyone else (who builds the house)? The Father-in-law himself builds the house. So, who is the creator of the new world in practical? Who is the creator? The Supreme Soul point of light will certainly not be called a creator. So, he (the creator) should be in a corporeal form.

समय – 10.34
जिज्ञासू – साकार में तो ब्रह्मा बाबा को ज्ञान चंद्रमा कहते हैं ना। साकार में बाप को क्यों ज्ञान सूर्य नहीं कहते हैं। राम वाली आत्मा।
बाबा – ज्ञान सूर्य शिव है। और ज्ञान सूर्यवंशी प्रजापिता है। मैं जब आता हूँ, तो सूर्य को ज्ञान देता हूँ। वो कहते हैं कि सूर्य को ज्ञान देता हूँ। तो इससे साबित होता है कि जो देने वाला है वो स्वयं आत्मा है। वो सूर्य तो साकार है।
जिज्ञासू – .....राम तो सूर्यवंशी है।
बाबा – वंशी। रघुकुल रघु के कुल का है।
जिज्ञासू – राम वाली आत्मा सूर्यवंशी बन गई ना।

Time: 10.34
Student: Brahma Baba is called the moon of knowledge in corporeal form, isn't he? Why is the father not called the Sun of knowledge in corporeal form? He is called the soul of Ram.
Baba: The Sun of knowledge is Shiv and Prajapita belongs to the dynasty of the Sun of knowledge. When I come, I give knowledge to Sun. He (i.e. Shiv) says: I give knowledge to Sun. So, it proves that the giver is Himself a soul. That Sun (to whom He gives) is corporeal.
Student:…….Ram belongs to the dynasty of Sun *(Suryavanshi)*.
Baba: He belongs to the dynasty, *Raghu kul* (meaning) he belongs to the dynasty of *Raghu*.
Student: The soul of Ram became *Suryavanshi*, did he not?

बाबा – रघु माना ही सूर्य। रघु का अर्थ ही है सूर्य। राम वाली आत्मा ज्ञान सागर कही जा सकती है। सागर इस पृथ्वी से कनेक्टेड है। सूर्य तो सागर से भी परे है। और पृथ्वी से भी परे है। पहाड़ों से भी परे है। पहाड़ों में जो सबसे बड़ा पहाड़ हिमालय पहाड़ है। हिम आलय। बर्फ का घर है। उससे भी परे है।
जिज्ञासू – सूर्य को ..... माना सूर्य तो साकार होना चाहिए ना।
बाबा – सूर्य। जैसे बृहस्पति है, मंगल है, बुद्ध है, ये दो से मिलकरके एक है चैतन्य में। एक है स्थूल रूप और एक उसमें प्रवेश हुई आत्मा। ऐसे ही सूर्य के भी दो रूप हैं। एक निराकार और एक साकार।
Baba: *Raghu* means Sun. The very meaning of *Raghu* is Sun. The soul of Ram is called an ocean of knowledge. Ocean is connected to this Earth. Sun is beyond the ocean as well as beyond the Earth. It is beyond the mountains as well. It is beyond even the biggest mountain among all the mountains, the Himalayas; the house (*aalay*) of ice (*him*).
Student: The Sun…….It means that Sun should be in a corporeal form, should it not?

Baba: Sun. For example there is Jupiter *(Brihaspati)*, Mars *(mangal)*, Mercury *(Buddha)*. These are one living form by the union of two. One is in the physical form and the other is the soul that enters in it. Similarly, there are two forms of Sun. One is incorporeal and the other is corporeal.

समय – 12.40
जिज्ञासू – प्रजापिता वाली आत्मा सिक्ख धर्म में जाती है क्या? हर एक धर्म में जाकर राज्य स्थापना करती है ना।
बाबा – हर एक धर्म में कनवर्ट नहीं होती है। हर धर्म में जाकरे हर धर्म में राजाई का फाउन्डेशन डालने के लिए जाता है।
जिज्ञासू – वो पक्का प्रवृत्ति है। तो सन्यास धर्म में जब जाती है शंकरावार्य को खंडन करने के लिए, द्वैतवाद को खंडन करने के लिए.....
Time: 12.40
Student: Does the soul of Prajapita go to Sikhism? It goes to every religion and causes the establishment of kingdom, does it not?
Baba: It does not convert into every religion. It goes to every religion to lay the foundation of kingship in every religion.
Student: He is a firm (follower of the path of) household. So, when he goes to *Sanyas* religion to oppose *Shankaracharya*, to oppose the dualism…….

बाबा – सन्यास धर्म में शंकराचार्य जब आए हैं, आद्य शंकराचार्य। उस समय उनकी गद्दियाँ नहीं होती थी। सन्यास धर्म की गद्दी नहीं चली थी शुरूवात में। उन्होंने घूम–घूम करके

चारों दिशाओं में चार मठ स्थापन किए। बाद में उनकी गद्दियाँ स्थापन हुई। तो गद्दी स्थापन करने का काम भी प्रजापिता का है।
जिज्ञासू – बाबा, प्रवृत्ति नहीं होने के बाद भी सन्यास धर्म को प्रवृत्ति होती है ना।
बाबा – जो आद्य शंकराचार्य था वो बाल ब्रह्मचारी था। बाद के सन्यासी सब बाल ब्रह्मचारी नहीं होते हैं।
Baba: When *Shankaracharya* emerged in *Sanyas* religion, *Aadya* Shankaracharya (the first Shankaracharya); at that time they did not have seats of power. There were no seats of power in *Sanyas* religion in the beginning. He travelled everywhere and established four temples (*maths*) in four directions. Later on their seats of power were established. So, the task of establishing the seats of power also belongs to Prajapita.
Student: Baba, inspite of not having a household, there is a household in the *Sanyas* religion, isn't it?
Baba: The *Aadya* (first) *Shankaracharya* was *Baal Brahmachaari* (celibate since childhood). Not all the latter *Sanyasis* were *Baal Brahmachaaris*.

समय – 14.24
जिज्ञासू – बाप, ये बात आता है मुरली में, कर्मों में ब्रह्मा को फॉलो करो। और डाईरेक्शन बाप का फॉलो करो। ब्रह्मा ने किसी को दुःख तो नहीं दिया; लेकिन वो दुःख तो लिया है ना। बच्चों से दुःख लिया।
बाबा – अगर कोई दुःख लेता है तो अपनी आत्मा को दुःखी करता है या दूसरों को दुःखी करता है?
जिज्ञासू – अपने आपको तो दुःखी करते हैं दूसरों को भी दुःखी करते हैं।
बाबा – दूसरों को दुःखी करता है? अगर कोई दुःख लेता है। मान लो किसीने गाली दे दी। और हमारी आत्मा अंदर–अंदर दुःखी होती रही तो उससे कोई दूसरे को दुःख हुआ।
जिज्ञासू – नहीं हुआ।
Time: 14.24
Student: Father, it is mentioned in the *Murlis* that we should follow Brahma in actions and we should obey the directions of the Father. Brahma certainly did not give sorrow to anyone, but he indeed took sorrow, did he not? He took sorrow from the children.
Baba: If someone takes sorrow, does he make his own soul sorrowful or does he make others sorrowful?
Student: They make themselves as well as others sorrowful.
Baba: Does he make others sorrowful? If someone takes sorrow, suppose someone hurled abuses at us and our soul continued to become sorrowful inside. So, did anyone else become sorrowful due to it?
Student: No.

बाबा – नहीं हुआ। कोई हिसाब–किताब नहीं बना दूसरे के साथ। हमारी आत्मा का हनन हो गया। हमने अपना टाइम वेस्ट कर दिया। तो ब्रह्मा की सोल ने अपना टाइम वेस्ट किया। किसी दूसरे को तो दुःख नहीं दिया। तो वो ही अंतर पड़ गया। लेकिन ये भी नहीं करना है आत्मघात महापापी कहा जाता है। आपघात भी नहीं करना है।
जिज्ञासू – उस बात में ब्रह्मा को नहीं फॉलों नहीं करना है।
Baba: No on became sorrowful. We did not develop any *karmic* account with others. Our soul was hurt. We wasted our time. So, Brahma's soul wasted its time. He indeed did not give sorrow to anyone. So, that was the difference. But we should not even do that. The one who commits suicide is called the biggest sinner. We should not even hurt (our soul).
Student: We should not follow Brahma in that aspect.

बाबा – हाँ जी। नहीं वो कोई कर्म थोड़े ही है। वो तो अंदर–अंदर–2 सोचने की बात है। कर्म तो कर्मेन्द्रियों से किए जाते हैं। माना ब्रह्मा ने कर्मेन्द्रियों से ऐसा कर्म नहीं किया जिससे कोई को दुःख हो जाए। इसलिए कर्मेन्द्रियों के कर्मों में ब्रह्मा को फॉलो करना है। और बात मेरी माननी है।
जिज्ञासू – लेकिन ब्रह्मा को तो ज्ञान नहीं है वो तो दुःख लिया है। ज्ञान है कि किसको दुःख न लेना है न देना है।
बाबा– हाँ जी।
Baba: Yes. No, those aren't actions at all. That is about thinking in the mind. Actions are performed through the organs of action. It means that Brahma did not perform any such actions through the organs of action to cause sorrow to anyone. That is why we have to follow Brahma in actions through the organs of action. And you have to listen to My versions.
Student: But Brahma did not have knowledge. He took sorrow. The knowledge is that one should neither take sorrow nor give sorrow.
Baba: Yes.

समय – 16.18
जिज्ञासू – बाबा, जो आज क्लास में रूपबसंत के बारे में आया ना। जो ज्ञान और योग की बात है ना।
बाबा– बसंत ऋतु में फूल खिलते हैं। उनकी सुगंध चारों ओर फैलती है। ऐसे ही ये ज्ञान की दुनियाँ है, जिसमें अच्छे और खुशबू वाले और बदबू वाले दोनों प्रकार के फूल खिलते हैं। तो जो खुशबू देने वाले फूल हैं। वो बसंत ऋतु बनाने वाले हैं। बसंत माना खुशबु देने वाले। चारों तरफ दिव्य गुणों की खुशबू फैलाते हैं। जहाँ जायेंगे, जिससे बात करेंगे, जिसके सामने उनका मुखड़ा पहुंचेगा, उन्हें देखकर सब खुश होंगे। उसको कहते हैं बसंत। वो एक बसंत का पार्ट भी ह जो सौ परसन्ट बसंत का पार्ट बजाता है।
Time: 16.18
Student: Baba, there was a mention about *Roop-Basant* in today's class. It is about knowledge and *yog*, isn't it?
Baba: Flowers blossom in spring season (*basant ritu*). Their fragrance spreads everywhere. Similarly this is a world of knowledge in which both kinds of flowers, i.e. those with nice fragrance and those with bad odour blossom. So, the flowers that give fragrance bring about the spring season (*basant*). *Basant* means those who give out fragrance, those who spread the fragrance of virtues everywhere. Wherever they go, to whomsoever they talk, whomsoever they meet in front, everyone will become happy on seeing them. That is called *basant*. There is a role of *basant* as well, the one who plays the part of *basant* hundred percent.

और उसके मुकाबले एक रूप का पार्ट। जो इतना रूपवान है, इतना रूपवान है कि जब संसार में प्रत्यक्ष होगा; जिसने एक बार भी उसको देखा होगा, वो उसके रूप को भूल नहीं सकेगा। भूलना चाहे तो भी भूल नहीं सकेगा। जैसे बाबा कहते हैं– अभी समस्या ये है कैसे याद करें। माया बार–बार भुलाए देती है। फिर क्या होगा? फिर समस्या ये हो जावेगी देखने वालों की कि जिसने देखा है वो उसको, छवि को भूल नहीं सकेगा। कैसे भूलें, ये कहाँ मुसीबत पड़ गई, आफत पड़ गई पीछे। ये स्थिति हो जावेगी। तो बताओ वो रूप कौन है और बसंत कौन है?
And when compared to him, there is a part of *roop* (beauty). He is so beautiful that when he is revealed in the world, whoever has seen him even once will not be able to forget his beauty. He will not be able to forget even if he wishes to forget. For example, Baba says,

Now the problem is , 'how should we remember'? *Maya* makes us forget again and again. Then what will happen? Then the problem for the onlookers will be that whoever observes will not be able to forget him, his image. (They will think) How should I forget? What is this problem? This problem is chasing me. That will be the stage. So, say, who is that *roop* and who is *basant*?

जिज्ञासू– बाप और ब्रह्मा ना। माँ–बाप।
बाबा – आधा सच्चा, आधा गड़बड़ा गए। बताओ रूप कौन है और बसंत कौन है?
जिज्ञासू – रूप प्रजापिता, बसंत वैष्णवी।
बाबा – हाँ। रूप है प्रजापिता ब्रह्मा और बसंत है दिव्य गुणों की खुशबु फैलाने वाली वैष्णवी, नारायणी। ये रूप बसंत की जोड़ी है, जो हमारे जीवन का लक्ष्य है। क्या लक्ष्य है? नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी। ब्रह्मा को किस हिसाब से बोल दिया?
जिज्ञासू – ब्रह्मा भी तो .....
बाबा – बसंत? वो खुशबू फैलाएगा ?
जिज्ञासू – माना वो श्रेष्ठ धारणा वाला कहा जाता है ना बाप।
Student: It is the father and Brahma, isn't it? Mother and Father.
Baba: Half (your answer) is true and (for the other) half you became confused. Say, who is *roop* and who is *basant*?
Student: Prajapita is *roop* and *Vaishnavi* is *basant*.
Baba: Yes. Prajapita Brahma is *roop.* And *Vaishnavi*, *Narayani* is *basant*, the one who spreads the fragrance of divine virtues. They are a couple of *roop* and *basant,* which is the goal of our life. What is the goal? To change from a man to Narayan and from a woman to Lakshmi. On what basis did you utter the name Brahma (for *basant*)?
Student: Brahma also…….
Baba: *Basant*? Will he spread fragrance?
Student: Father, I mean, he is called the one with righteous *dhaarnaas* (inculcations), isn't it?

समय – 19.20
जिज्ञासू – बाबा, बाप के वारिस हैं, बाप के प्रजा है और बाप के भक्त भी है। जो भक्त बनते हैं उनको शरीर जरूर छोड़ना पड़ता है ना। वो अंत में जो आधी पाप आत्मायें, आधी पुण्य आत्मांयें जो साढ़े चार लाख हैं। उसमें वो भक्त नहीं होंगे ना वो सारे ज्ञानी आत्मायें है ना। तब वो भक्ति की बात क्या है?
बाबा – भक्त की बात क्यों है?
जिज्ञासू – वो तो बाप के भक्त भी है वारिस भी हैं प्रजा भी है। वो सही है ना? लेकिन वो साढ़े चार लाख में सभी ज्ञानी तू आत्मायें है ना। .....
Time: 19.20
Student: Baba, there are heirs of the Father, subjects of the Father and there are devotees of the Father as well. Those who become devotees have to definitely leave the body, haven't they? In the end there are half, i.e. four and a half lakh (450 thousand) sinful souls *(papatma)* and half, i.e. four and a half lakh noble souls *(punyatma)*. Among them there won't be the devotees; they all will be knowledgeable souls, won't they? Then what is the issue about *bhakti* (devotion)?
Baba: Why is it an issue about *bhakt* (devotee)?
Student: There are devotees, heirs and subjects of the Father as well. It is right, isn't it? But among those four and half lakh, they all are knowledgeable souls, aren't they?……..

बाबा – नहीं। साढे चार लाख में सब धर्मों की आत्मायें हैं बीजरूप लेकिन उन बीजरूपों में जो सिर्फ सूर्यवंशी और चंद्रवंशी बीज हैं, वो प्रजा हैं। और जो इस्लाम धर्म में कनवर्ट होने वाले बीज हैं, वो भक्ति का फाउन्डेशन ज़रूर डालेंगे। ऐसा हो नहीं सकता जो वो भक्ति को छोड़ दें। चाहे इस्लाम धर्म के हो, बौद्धी धर्म के हो, क्रिश्चियन धर्म के हो। कोई धर्म के बीज क्यों न हो। उनका छिलका ही इस प्रकार का है। कि वो भक्ति को पूरा छोड़ नहीं सकते।
जिज्ञासू – तो वो कनेक्शन कैसे दिखाई देते हैं यहाँ स्थूल रूप में।
बाबा – देखने से ही, उनके प्रैक्टिकल जीवन से ही पहचान में आवेगा।
Baba: No, there are all kinds of seed-form souls of all the religions among the four and a half lakhs, but among those seed-form souls, those who are only the seeds of the Sun dynasty *(Suryavanshi)* and the Moon dynasty *(Chandravanshi)* are the subjects. And the seeds that convert into Islam religion, they will certainly lay the foundation of *bhakti.* It cannot be possible that they leave *bhakti*. Whether they belong to the Islam religion, Buddhism, Christianity, they may be seed of whichever religion; their peel is such that they cannot leave *bhakti* completely.
Student: So, how is that connection visible here in the physical form?
Baba: It can be recognised in their practical life just by observing.

समय – 21.30
जिज्ञासू – सुप्रीम सोल जो एवर प्योर है। जिस मुकर्रर तन में प्रवेश करते हैं। वो पवित्रता में ऊँची स्टेज को प्राप्त करते हैं। बाप समान स्टेज बनती है। वो श्रेष्ठ संस्कार सुप्रीम सोल शिव के.....
बाबा– सुप्रीम सोल बनाते हैं या हर आत्मा अपने पुरूषार्थ से बनती है?
जिज्ञासू – पुरूषार्थ से बनती है। लेकिन उनके संग के रंग का प्रभाव भी होता है ना।
Time: 21.30
Student: The Supreme Soul is ever pure. The appointed body in which He enters attains a high stage of purity. His stage becomes equal to that of the Father. Are those elevated *sanskars* of the Supreme Soul Shiv……..
Baba: Does the Supreme Soul make (anyone equal to Himself) or does every soul become so through its own special effort for the soul *(purusharth)*?
Student: It becomes through (its own) *purusharth*. But there is also an influence of His colour of company, isn't it?

बाबा – संग का रंग भी साकार में लगता है या निराकार में लगता है? साकार में लगता है। प्रजापिता के लिए साकार कौन है? कोई साकार है? याद ही साकार है। जो याद है उस याद की ही पावर से परिवर्तन होना है। बाकी कोई साकार का संग नहीं है। बच्चों के लिए ये फायदा है विशेष कि बच्चों को साकार मिलता है, इसलिए सहज हो जाता है।
जिज्ञासू – लेकिन उसको मुश्किल हो जाता है ना।
बाबा – नहीं। मुश्किल भी नहीं होता है। मुश्किल तब तक है जब तक अपने स्वरूप के ऊपर पक्का निश्चय नहीं है कि यही मुकर्रर रथ है। जब ये पक्का निश्चय हो जाए कि यही मुकर्रर रथ है, तो अपने स्वरूप को याद करना सहज है या पराए स्वरूप को याद करना सहज होता है? अपने को याद करना और सहज हो जाता है।
Baba: Is the colour of company applied in corporeal form or in incorporeal form? It is applied in the corporeal form. Who is the corporeal one for Prajapita? Is there any corporeal one? The remembrance alone is corporeal. Transformation is to take place only through the power of that remembrance. And as for the rest, there is no colour of the company of any

other corporeal (for him). The special benefit for the children is that the children find the corporeal form. This is why it becomes easy (for them).
Student: But it becomes difficult for him (the corporeal), doesn't it?
Baba: No. It is not difficult [for him] either. It is difficult until he develops firm faith on his form that he (himself) is the appointed chariot. When he develops the firm faith that he (himself) is the appointed chariot, then is it easy to remember one's own form or is it easy to remember others' form? It becomes easier to remember the self.

जिज्ञासू – लेकिन इतना श्रेष्ठ बनकर सबसे पतित क्यों बनना है अंत में?
बाबा– ये बाप टीचर और सदगुरू समझने वाले नम्बरवार अलग–अलग हैं। जिसने एक बार अंजाम कर लिया ये मेरा बाप है। तो उसको इस गंदी दृष्टि से कोई देखता है कि हमारी अम्मा के साथ क्या–क्या काम करता है। ये दृष्टि आवेगी? बिल्कुल नहीं आवेगी। अगर आती है। उससे क्या साबित हुआ?
जिज्ञासू – उसको पूरा निश्चय नहीं है।
Student: But why should he become most sinful *(patit)* in the end after becoming so elevated?
Baba: Those who consider Him to be the father, teacher and *Sadguru* are separate [and] numberwise. The one who has made the resolve once and for all, 'this is my father', then does he see him (the corporeal form) with dirty eyes (thinking) he acts like this with my mother. Will he develop such a vision? He will never develop it. If he develops such thoughts, what does it prove?
Student: He does not have full faith.

बाबा – अरे! पक्का सूर्यवंशी नहीं है। सूर्यवंशी बनना है। क्या? सूर्यवंशी बनना है। इसलिए ये बुद्धि में पक्का निश्चय होना चाहिए। बाप, बाप भी है। कौन है? हमारा बाप भी है। और सुप्रीम टीचर भी है। और हमारी सबकी सद्गति करने वाला सदगुरू भी है। वो श्रेष्ठ भावना हटने न पाए। जैसे ब्रह्मा बाबा पूछते थे, किसकी गोद में आए हो? अगर ये बुद्धि में है कि शिव बाबा की गोद में आए, तो क्या हुआ? पास। अगर ये बुद्धि में आया कि ब्रह्मा की गोद में आए, तो क्या हुआ? फेल। तो अगर देखने वालों ने प्रजापिता को देखा और उसमें सुप्रीम सोल को नहीं देखा तो देखने वाले की गलती हुई या किसकी गलती हुई? देखने वाले की गलती हुई।
Baba: Arey, he is not a firm *Suryavanshi.* He has to become *Suryavanshi*. What? He has to become *Suryavanshi.* This is why there should be this firm faith in the intellect, the father is also the Father. What is He? He is our Father as well as our Supreme Teacher and He is also the *Sadguru,* who brings about the true salvation of everyone. We should not lose that elevated feeling. For example, Brahma Baba used to ask, in whose lap have you come? If it is in your intellect that you have come in the lap of Shivbaba then what are you? Pass. If it comes in your intellect that you have come in the lap of Brahma, then what are you? Fail. So, if the observers saw Prajapita and did not observe the Supreme Soul in him, then is it the mistake of the observer or whose mistake is it? It is the mistake of the observer.

सुप्रीम सोल तो नहीं कहता कि तुम ये समझो कि ये, ये बोलता है कि वो बोलता है। ये कर्म ये करता है, वो कर्म वो करता है। तुम क्या समझो? तुम यही समझो कि जो कुछ करते है वो सब शिवबाबा ही करते है। अगर ये कुछ उल्टा करते भी हैं तो मैं जिम्मेवार बैठा हुआ हूँ। कौन कहता है? शिवबाबा कहते हैं। इसलिए दृष्टि ही बदल जानी चाहिए। लेकिन माया ऐसे हड़–खड़ है कि बुद्धि को घुमाए देती है। कुछ न कुछ अनिश्चय वाली बात पैदा कर

देगी। कुछ न कुछ अनिश्चय वाला वाईब्रेशन फैलाए देगी और हम बच्चे उसके प्रभाव में आ जाते हैं।
The Supreme Soul does not tell you to think tell: this one does like this, this one speaks this. That one speaks that. This one performs this action. That one performs that action. What should you think? You always think, whatever is done is done by Shivbaba only. 'Even if this one does something wrong, I am responsible for it.' Who says that? Shivbaba says it. This is why the vision itself should change. But *Maya* is so tough that she turns the intellect. She creates some or the other situation to make us lose faith. She will spread some or the other vibration to make us lose faith and we children are influenced by her.

समय – 26.07
जिज्ञासू – बाबा, भक्तिमार्ग में बिना समझे करते रहते हैं। यहाँ भी ब्लाइंड फेथ (अंधश्रद्धा) वाले होते हैं कि जो बाबा ने कहा तो करना है बस। उसका अर्थ तो नहीं समझते; लेकिन बाबा ने बोला है तो करना है बोलते है। तो अंतर क्या है?
बाबा – अगर निश्चय बैठ गया 100 परसेन्ट तब तो ठीक है कि भगवान ने ही ये डाईरेक्शन दिया है, भगवान ने ही कहा है। तो कर लेने में कोई हर्जा है? अरे! जिसको ये 100 परसेन्ट निश्चय हो गया कि हमें साक्षात् भगवान मिल गया। अर्जुन को साक्षात् निश्चय हो गया कौन खड़ा है हमारे सामने? साक्षात् भगवान खड़ा है विराट रूप धारी। तो जो कहेगा सो नहीं करेगा? अगर कहेगा सो करेगा तो निश्चय बुद्धि। और वो कहे और वो ना कर दे कि मैं ये नहीं कर सकता तो अनिश्चय बुद्धि।
Time: 26.07
Student: Baba, in the path of *bhakti* people keep doing things without understanding. Even here there are people with blindfaith (who think), when Baba has said it, we have to do it; that is all. . They do not understand its meaning; but they say, if Baba has said it, we have to do it. So, what is the difference?
Baba: If you have developed 100 percent faith, it is alright (to think) God Himself has given this direction, God Himself has said this. Then, is there any harm in doing it? *Arey*! The one who developed 100 percent faith: we have found God before the eyes; Arjun developed the faith, who is standing in front of me? God, the one with a gigantic form is standing in front of me. So, will he not do whatever He (God) says? If he does whatever He says, then he has a faithful intellect. And if He says (something) and he declines saying: I cannot do this; then he has a doubtful intellect.

जिज्ञासू – वो किया तो फिर ब्लाईन्डफेथ से ही किया ना?
बाबा – ये ब्लाईन्डफेथ हुआ? ब्लाईन्ड उसे कहा जाता है जो समझे बिगर मान ले कि ये हमारा बाप है। यहाँ तो समझ लिया ना उसने कि ये भगवान बाप है। और यहाँ अभी ये पक्का है कि जब तक कृष्ण की आत्मा नहीं समझेगी तब तक कोई भी समझेगा ही नहीं। पहले पत्ते ने ही नहीं समझा तो फिर और पत्ते पहले कैसे समझ लेंगे। इसलिए सबको निश्चय–अनिश्चय आता रहता है। और कुछ न कुछ निश्चय–अनिश्चय की बातें भी करते रहते हैं। बात से भी पकड़ में आ जाता है निश्चय बुद्धि है या अनिश्चय बुद्धि है।
Student: Even if he did that, he did it not on the basis of blindfaith, didn't he?
Baba: Is it blindfaith? The one who accepts without understanding, 'this is our father' is called blind. Here, he has understood that this is God the Father. And here, now it is sure that until the soul of Krishna understands, nobody will understand at all. When the first leaf himself has not understood then how will the other leaves understand before him? This is why everyone keeps passing through the cycle of faith and doubt and they also keep talking

something or the other related to faith and doubt. We come to know on the basis of their conversation as well, whether they have a faithful intellect or a doubtful intellect.

समय – 28.16
जिज्ञासू – बाबा, प्वाइंट आया मुरली में जो बूढ़ी माताओं को भारी प्राप्ति मिलती है।
बाबा – बांधेली माताओं को और बूढ़ी माताओं को प्राप्ति भारी है। हाँ जी।
जिज्ञासू – लेकिन उनको भावना जास्ती होती है। तो ज्ञान नहीं होती है। बिना सही ज्ञान एक्युरेट याद आ सकती है क्या?
बाबा – अगर–मगर भी तो लगा दिया बाद में। माताओं के लिए अगर कौनसा लगा दिया, परंतु कौनसा लगा दिया?
जिज्ञासू – ममत्व मिटाए तो।
बाबा – हाँ। अगर ममता के ऊपर उन्होंने जीत पा ली, मोह के ऊपर जीत पा ली। मेरा, मेरा के ऊपर जीत पा ली। तो बहुत ऊँच पद पा सकती है।
जिज्ञासू – माना वो याद एक्युरेट होता है?
बाबा – हाँ अगर ममत्व के ऊपर जीत पा ले तो।
Time: 28.16
Student: Baba, a point has been mentioned in the *Murli* that the aged mothers achieve a lot of attainments.
Baba: The mothers in bondages and the aged mothers achieve a lot of attainments. Yes.
Student: But they are more emotional. They do not have knowledge. Without correct knowledge can they remember accurately?
Baba: (Baba has) also added ifs and buts later. Which ifs and buts were added (by Baba) in the case of mothers?
Student: If they gain victory over attachment.
Baba: Yes. If they gain victory over attachment, if they gain victory over (the feeling of) 'mine, mine', they can achieve a very high post.
Student: Does it mean that remembrance is accurate?
Baba: Yes, if they gain victory over attachment.

समय – 29.26
जिज्ञासू – बाबा ये जो अष्टदेव हैं वो बाप को अंतिम जन्म में छोड़कर पूरा जन्म में सहयोगी बनते हैं ना, सूर्यवंशी। क्या अष्ट रत्न उनसे भी श्रेष्ठ नहीं है?
बाबा– उनसे ज्यादा श्रेष्ठ हैं?
जिज्ञासू – नहीं है?
बाबा – क्यों ? रतन जो होते हैं वो एक दूसरे से कम कीमत वाले होते हैं। और जो सूर्यवंशी अष्टदेव हैं वो सिर्फ सूर्यवंशी हैं। सब हीरे–हीरे हैं। कोई भी माणिक नहीं है, मोती नहीं है, पन्ना नहीं है, मूंगा नहीं है।
Time: 29.26
Student: Baba, these eight deities *(ashta dev)*, the *Suryavanshis* (those belonging to the Sun dynasty) become the helpers of the Father in all the births except the last one, don't they? Aren't the eight gems *(ashta ratan)* greater than them?
Baba: Are they greater than them?
Student: Are they not?
Baba: Why? The gems are less valuable than each other. And the *Suryavanshi* eight deities are just *Suryavanshis*. All are only diamonds. Nobody is a *maanik* (ruby), *moti* (pearl), *panna* (emerald), (or) *moonga* (coral).

जिज्ञासू – तो अष्टरत्न से श्रेष्ठ हैं वो?
बाबा – हाँ। वो सदैव सूर्यवंशी के पार्ट बजाने वाले। और वो (अष्टरत्न) तो बीच में द्वापर युग से ही दूसरे धर्मों में कनवर्ट हो जायेंगे।
जिज्ञासू – लेकिन अष्टरत्नों का क्यों इतना गायन है। लेकिन अष्टदेवों का क्यों नहीं है? अष्टरत्न की माला सिमिरते हैं।
बाबा – अष्टरत्न बनेंगे ही तब जब उनमें वो देव प्रवेश करेंगे।
जिज्ञासू – वो अष्टदेव?
बाबा – हाँ जी। वो अष्टदेव जब तक प्रवेश करके उनके द्वारा श्रेष्ठ पार्ट नहीं बजायेंगे तब तक वो अष्टरत्न की गिनती में ही नहीं आवेंगे।
जिज्ञासू – माना उनका भी वो गायन है?
बाबा – अष्टदेव है आत्मा। तो अष्टरत्न है जैसे उसका शरीर।
Student: So, are they greater than the eight gems?
Baba: Yes. They always play a *Suryavanshi* part. And they (the eight gems) will convert to other religion in between from the Copper Age itself.
Student: But why are the eight gems praised so much? But why are the eight deities not praised so much? The rosary of the eight gems is rotated.
Baba: They will become eight gems only when those (eight) deities enter in them.
Student: Those eight deities?
Baba: Yes. Until those eight deities enter in them and play a righteous part, they will not be counted as the eight gems at all.
Student: Does it mean that they are also praised like that?
Baba: The eight deities are the souls. So, the eight gems are like their bodies.

समय – 30.56
जिज्ञासू – जो अष्टदेव हैं वो आत्मायें है ना।
बाबा – आत्मा है।
जिज्ञासू – तो उसका शरीर तो नहीं रहता है।
बाबा – शरीर नहीं रहता है? शरीर रहता है; लेकिन उनमें ये शिफ्त हो जाती है परिपक्व स्टेज पाने पर कि जब चाहें तो अपने शरीर में प्रवेश करके पार्ट बजायें और जब न चाहें तो शरीर अलग और आत्मा अलग। और वो आत्मा जहाँ चाहे, जिसमें चाहे, उसमें प्रवेश करके उसकी बुद्धि को हिलाके और वापस अपने शरीर में आ जाएगी।
Time: 30.56
Student: The eight deities are the souls, aren't they?
Baba: They are souls.
Student: So, they don't have their bodies, do they?
Baba: They don't have their bodies? They do retain/have the body, but on reaching the stage of maturity, they develop the quality/specialty that they can play the part by entering in their bodies whenever they wish and whenever they don't wish, the soul can become separate from the body. And that soul will go wherever it wants, enter in whomsoever it wants and shake its intellect and come back to its own body.

समय–31.38
जिज्ञासू– बाबा ये जगन्नाथ मंदिर में जो बाहर में नग्न मूर्ति को दिखाते हैं ना।
बाबा– जगन्नाथ के मंदिर में बाहर जो मूर्तियाँ रखी है और कोनार्क मंदिर में जो बाहर मूर्तियाँ रखी है, वो नंगी मूर्तियाँ दिखाई गयी है, अश्लील।
जिज्ञासू– हां बाबा। मुरली में प्वाइंट है कि गवर्नमेन्ट की इतनी ताकत नहीं है उसको निकालने के लिए।

बाबा– हांजी।
जिज्ञासू– लेकिन बाबा ने कहा है कि कोई गलत काम किया है इसलिए उसको बाहर रखा है। मंदिर के अंदर में नहीं रखा है।
बाबा – हाँ। जब तक सम्पन्न नहीं बनेंगे तब तक स्वर्ग जैसा जो मंदिर है, उसमें प्रवेश करने लायक नहीं है। तब तक वो पुरूषार्थी जीवन है। सम्पन्न जीवन नहीं कहा जावेगा।
Time: 31.38
Student: Baba, the naked idols are shown in the outer side of the temple of *Jagannath*, aren't they?
Baba: The idols shown on the outer side of the temples of *Jagannath* and the Konark temple are naked idols, they are indescent.
Student: Yes Baba. There is a point in the *Murli* that the Government does not have enough power to remove them.
Baba: Yes.
Student: But Baba has said that they have committed some wrong deeds because of which they have been kept outside. They have not been kept inside the temple.
Baba: Yes, until they become complete they are not fit to enter the temple -like heaven. Until then they are leading a *purusharthi* (making special effort for the soul) life. It cannot be called a life with a complete stage.

जिज्ञासू – तो गवर्नमेन्ट को ताकत क्यों नहीं है उसको निकालने के लिए?
बाबा – गवर्नमेन्ट को इसलिए ताकत नहीं है क्योंकि वो सच्चे पुरूषार्थी हैं, सम्पन्नता की स्टेज को पाने के लिए। और दुनियाँ में कोई भी इतने सच्चे पुरूषार्थी नहीं है, जो मनुष्य से देवता बनने का पुरूषार्थ कर रहे हों।
जिज्ञासू– इसलिए ताकत नहीं है।
बाबा– हांजी।
Student: So, why does the Government not have power to remove them?
Baba: The Government does not have power because they are the ones who make true special effort for the soul *(purusharth)* to achieve the stage of perfection. And nobody else in the world are such true *purusharthis* (makers of special effort for the soul) who are doing the *purusharth* to change from human beings to deities.
Student: That is the reason, why they (Government) don't have the power.
Baba: Yes.

समय – 33.12
जिज्ञासू – बाबा प्रजापिता हर धर्म में जाकर राज्य स्थापना करने जाते है ना। तब उसका जो आहार, व्यवहार है, उसके प्रभाव में आना पड़ता है ना। तो वो मांसाहारी बनता है ना।
बाबा – मांसाहारी तो भारत के राजायें भी बनते हैं पहले से ही। दूसरी बात ये है। प्रजापिता जिस धर्म में भी राजाई स्थापन करने के लिए जाएगा या उनका जो भी ग्रुप साथ में जाएगा, वो उस धर्म की तमोप्रधान, रजोप्रधान स्टेज में जावेगा या सतोप्रधान स्टेज में जावेगा?
जिज्ञासू – सतोप्रधान में जावेगा।
बाबा – हाँ जी। ये अंतर होता है।
Time: 33.12
Student: Baba, Prajapita goes to establish kingship in every religion, doesn't he? Then he has to come under the influence of their eating and living habits, hasn't he? So, he becomes a non-vegetarian, doesn't he?
Baba: The kings of India also become non-vegetarian from the very beginning. The second thing is, in whichever religion Prajapita or his group goes to establish kingship, will he go in

that religion's *tamopradhan* (dominate by the quality of darkness or ignorance), *rajopradhan* (dominated by the quality of activity or passion) stage or in the *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) stage?
Student: He will go in the *satopradhan* (period).
Baba: Yes, this is the difference.

जिज्ञासू – तब वो नहीं होता है ना वहाँ।
बाबा – वो संग का रंग नहीं लगता जिससे एकदम नीचे आना हो।
जिज्ञासू – लेकिन कुछ ना कुछ प्रभाव तो पड़ता है ना?
बाबा – प्रभाव पड़ता है, इसलिए तो कलियुग में आकर प्रजापिता और प्रजापिता के जो भी सहयोगी हैं; भले तीन बटे चार उनका हिस्सा सुख का होता है। फिर भी ज्यादा दुःखी हो जाते हैं कलियुग में।
Student: At that time he is not present there, is he?
Baba: He does not become coloured by the company to that extent due to which he becomes completely degraded.
Student: But he is influenced to some extent or the other, isn't he?
Baba: He is influenced. This is why although Prajapita and all his helpers experience happiness for three-fourth of the births, they become more sorrowful in the Iron Age.

समय – 34.52
जिज्ञासू – बाबा, देवता बनना है तो दैवी गुण धारण करना पड़ता है ना। दैवी गुण कैसे धारण करते हैं?
बाबा – देवता बनना है तो दैवी गुण धारण करना पड़ता है। तो देवता गुण कैसे धारण करें? ये प्रश्न आया। पहली बात तो ये है कि जो देवआत्मायें होती हैं, उनको ये प्रश्न नहीं आएगा कि देवता बनना पड़ता है। क्या? 'पड़ता' है माना एक तरफ से मजबूरी हो गई। उनके जीवन में देवता बनने की जैसे ललक लगी हुई होगी; 'बनना ही है'। बनना पड़ता है ऐसी कोई बंदिश महसूस नहीं होगी। उनका सहज राजयोग होगा।
Time: 34.52
Student: Baba, if we have to become deities, we have to imbibe divine virtues, haven't we? How can we imbibe divine virtues?
Baba: If we have to become deities we **have to** imbibe divine virtues. So, how should we imbibe divine virtues? This question has emerged. The first thing is that this question, 'we **have to** become deities', will not arise for those who are the deity souls. What? '**Have to**' means it is a kind of compulsion. It is as if they will crave to become deities. (They will think) they certainly have to become. There will not feel any such bondage that 'they have to become'. Their *Rajyog* will be easy.

समय – 35.44
जिज्ञासू – बाबा, जो अश्वत्थामा के भृकुटि के बीच में एक मणि दिखाते हैं ना। ज्ञान में अश्वथामा कौन है? जो भृकुटी के बीच में मणी दिखते है ना, वो आत्मा की यादगार है।
बाबा – हांजी। आत्मिक स्थिति की यादगार है।
जिज्ञासू – मतलब वो ज्ञान के संबंध में उसका विस्तार रूप में अश्वत्थामा का अर्थ क्या?
Time: 35.44
Student: Baba, a gem is shown in the middle of the forehead of *Ashwatthama* (a character in the epic Mahabharat), isn't it? Who is *Ashwatthama* in (the field of) knowledge? The gem that is shown in the middle of the forehead, isn't it? It is the memorial of the soul.
Baba: Yes. It is a memorial of the soul conscious stage.

Student: I mean, what is the meaning of *Ashwatthama* in detail in respect of the knowledge?

बाबा – अश्व माना क्या? 'अश्व' माना मनरूपी घोड़ा। 'इत्थ' माना क्या? स्थिर। माना आत्मारूपी घोड़े को स्थिर कर दिया और नाम पड़ गया अश्वत्थामा। अश्वत्थामा को माँ के ऊपर ज्यादा रिगार्ड था या द्रोणाचार्य बाप के ऊपर ज्यादा रिगार्ड था?
जिज्ञासू – द्रोणाचार्य के ऊपर।
बाबा– नहीं। माँ के ऊपर ज्यादा रिगार्ड था। उनको फिर भी बहुत से प्रश्न पैदा होते थे पिताजी के ऊपर। एकलव्य का एक अंगूठा काट लिया। तो भी उनको प्रश्न पैदा हुआ 'ये क्या किया?' ये तो अन्याय कर दिया।
जिज्ञासू – बाबा माँ के ऊपर जो प्यार रखने वाला है वो अश्वत्थामा है ना।
बाबा – हाँ जी।
Baba: What does *ashwa* mean? *'Ashwa'* means horse-like mind. What does '*itth'* mean? *Sthir* (constant). It means he made the horse-like soul (mind) constant and was named *Ashwatthama*. Did *Ashwatthama* have more regard for the mother or for the father *Dronacharya* (a character in the epic Mahabharat)?
Student: For *Dronacharya*.
Baba: No. He had more regard for the mother. Many questions used to emerge in his mind about his father's deeds. Also when he (i.e. *Dronacharya*) asked *Eklavya* (a character in the epic Mahabharat) to cut his thumb, a question arose to him *(Ashwatthama)*, why did he *(Dronacharya)* do this? He has done injustice.
Student: Baba, the one who has love for the mother is *Ashwatthama*, isn't he?
Baba: Yes.

समय – 41.22
जिज्ञासू – बाबा, देवतोयें अहिंसक कहे जाते हैं। काम कटारी का कोई विकार नहीं चलाते। तो काम कटारी की हिंसा मतलब मैं समझता हूँ; जो कमजोर होना, शक्ति क्षरण होना उसको कहते है बाप? उसका विस्तार रूप में क्या है? स्थूल सूक्ष्म हिंसा, काम कटारी ।
बाबा – काम विकार की शुरूआत ही कहाँ से होती है? किस इन्द्रियों से?
जिज्ञासू – भ्रष्टेन्द्रियों से।
Time: 41.22
Student: Baba, deities are said to be non-violent. They do not use the dagger of lust. So, what I understand by the dagger of lust is becoming weak, draining of the power. What is it in an elaborated form? [What is the elaborated form of] the subtle violence: the dagger of lust?
Baba: Where does the vice of lust begin from? From which organs does it begin?
Student: From the unrighteous organs.

बाबा – हाँ। भ्रष्ट इन्द्रियों से ही कामना की शुरूआत होती है। उससे पहले जो स्थिति होती है उसको काम विकार नहीं कहेंगे। जो काम विकार है वो मार करने वाला है। जो ज्ञान इन्द्रियों से पतन होता रहा सतयुग और त्रेता में उसको मार करने वाला नहीं कहेंगे क्योंकि उसमें क्षरण नहीं होता। शारीरिक स्थूल क्षरण नहीं हुआ। और द्वापर युग से शारीरिक स्थूल क्षरण होने लगा। शक्ति क्षीण होने लगी। इसलिए उसको पतित कहा गया। पतित माना ही नीचे गिरना। ये कर्मेन्द्रियों की थ्योरी है। शिवलिंग जलाधारी में ही रखा रहता है। उसको कोई पतित नहीं कहता। क्यों नहीं कहता? क्योंकि भल कीचड़ में है, गढ्ढे में है तो भी गढ्ढे में वो शक्ति क्षीण नहीं होती। इसलिए उसको पतित नहीं कहेंगे। वो एवर प्योर है।

Baba: Yes, desires begin from the unrighteous organs only. The stage prior to that will not be called lust. The vice of lust attacks. The downfall that took place through the sense organs in the Golden Age and the Silver Age will not be called a stage that attacks because it does not involve downfall. Physical, gross downfall did not take place. And from the Copper Age physical, gross downfall began. Downfall of power began. This is why it was called (becoming) sinful *(patit)*. The very meaning of 'sinful' is, to fall down. This is a theory of the organs of action. *Shivling* is always placed on *Jalaadhaari*. Nobody calls it sinful. Why doesn't anyone call (it sinful)? It is because although it is in mud, although it is in a pit, the power does not decline in the pit. That is why he will not be called sinful. He is ever pure.

जिज्ञासू – बाबा, जो ब्रह्मा–सरस्वती जो जन्म देती है वो प्रक्रिया है। मौखिक प्यार द्वारा।
बाबा – ब्रह्मा–सरस्वती?
जिज्ञासू – जो सतयुग में जन्म लेते हैं। माना राधा–कृष्ण।
बाबा – राधा–कृष्ण बड़े होकर अपने बच्चों को जन्म देते हैं मुख के प्यार से।
Student: Baba, the procedure through which Brahma and Saraswati give birth is of oral love.
Baba: Brahma-Saraswati?
Student: Those who take birth in the Golden Age, i.e. Radha and Krishna.
Baba: Radha and Krishna grow up and give birth to their children through oral love.

जिज्ञासू – माना ब्लॅड कनेक्शन भी चुम्बन द्वारा होती है। वो चुम्बन भी पब्लिक में वो नहीं कर सकते हैं ना।
बाबा – उसको बुरा माना ही नहीं जाता। व्यभिचार को बुरा माना जाता है। वहाँ व्यभिचार होता ही नहीं।
जिज्ञासू – बाबा, यहाँ भी पब्लिक में ऐसा नहीं करते है ना कही।
बाबा – यहाँ तो इसलिए (नहीं) करते हैं कि ऐसा किया माना जो कामेन्द्रियाँ हैं वो भी अपना कार्य करेंगी। उसके लिए एग्रीमेन्ट हो गया। वहाँ ऐसा कोई एग्रीमेन्ट नहीं होता है।
जिज्ञासू– तो इसलिए वहां प्राइवसी (एकांत) की बात नहीं।
बाबा– हांजी।
Student: It means the blood connection takes place through kissing? They cannot kiss in public, can they?
Baba: It is not considered bad at all. Adultery is considered to be bad. There is no adultery there at all.
Student: Baba, even here, this is not done in public anywhere, is it?
Baba: Here, they do so (restrict) because if they do so, it means, the organs of lust will also perform their function. It becomes an agreement for that. There is no such agreement there.
Student: That is the reason, why there is no question of privacy there.
Baba: Yes.

जिज्ञासू – बाबा, मुरली में बोला ना कि किसी से लेन–देन नहीं करना। लौकिक संबंधियों से भाई–बहनें होते है ना गृहस्थ में; उनसे ही मना है ना। .....
बाबा – लेन–देन करने के लिए मना नहीं किया। उधार लेने और उधार देने के लिए मना किया। लौकिक संबंधियों से रोजमर्रे के व्यवहार में जो ज्ञान में नहीं चलते हैं; उनसे तोड़ नहीं निभोयेंगे क्या? तोड़ निभायेंगे या नहीं निभायेंगे? या उनका सिर्फ लेते जोंयेंगे। वो देते जाये और हम लेते जाये और ये समझे कि ये कोई उधार थोड़े ही है; ये तो रोजमर्रे के जीवन में जो परंपरायें चल रहीं है मनुष्य जन्म में उन परंपराओं का निर्वाह कर रहे हैं वो लोग। इसलिए हमको देते हैं तो हम लेते जा रहे हैं। वो कोई जरूरी थोड़े ही है कि उन्होंने

दिया है तो हमको वापस करना पड़ेगा। और उधार किसे कहा जाता है? जो लिया है उसे वापस भी करना है। इसलिए ऐसा उधार नहीं लेना है और उधार देना भी नहीं है।
Student: Baba, it has been said in the *Murli* that we should not have any (financial) transaction with anyone. We should not have [give and take] with the *lokik* relatives, brothers or sisters in the household, isn't it?…..
Baba: You have not been stopped from having any transactions. You have been stopped from taking or giving loans. Will you not maintain relationship with the *lokik* relatives, who do not follow the path of knowledge, in your daily activities? Will you maintain the relationship with them or not? Or will you just keep taking from them? They will continue to give and we will continue to take and we think that this is not a loan. (We think that) "Those people are following the traditions that are being followed in the daily life in the human birth. That is why they give us. So, we are continuing to take. It is not necessary that if they have given we will have to return it." And what is called a loan? Whatever we have taken has to be returned as well. This is why we should not take any such loan and we should not give loan either.

जिज्ञासू – बाबा जो ज्योतिष शास्त्र हैं ना वो इन्सानों के जीवन की ग्रह की स्थिति में बताते है ना कि ये ग्रह यहाँ पर है, इसका` स्थान यहाँ पर है, इसका प्रभाव ऐसा होता है। ऐसा बोलते है । लेकिन अभी वो नव ग्रह तो तमोप्रधान है ना। उसका प्रभाव कैसा होता है?
बाबा – अभी ग्रहों में नौ ग्रह हैं। नौ प्रकार का पार्ट बजाने वाले नहीं है?
जिज्ञासू – हैं बाबा लेकिन वो तमोप्रधान हैं ना।
Student: Baba astrology describes the position of the planets in the life of human beings, doesn't it? (It describes) this planet is in this position; it is at this place, its influence is like this. They say like this. But now those nine planets are *tamopradhan* (dominated by the quality of darkness or ignorance), aren't they? Then how do they cast an influence?
Baba: Now there are nine planets. Are there not souls which play nine kinds of parts?
Student: Baba, they do exist, but they are *tamopradhan*, aren't they?

बाबा – इनमें सात्विक पार्ट बजाने वाला ग्रह भी है। और तामसी पार्ट बजाने वाला ग्रह भी है। अगर ऐसा न होता तो बृहस्पति की दशा हमेशा श्रेष्ठ नहीं मानी जाए। ऐसा नहीं कह सकते कि अभी सभी ग्रह तमोप्रधान है। इसलिए ज्योतिष का रिजल्ट इतना अच्छा नहीं आ सकता। नहीं। वो तो एक गणित है। मैथेमेटिशियन, गणितज्ञ कोई होशियार होता है और कोई डल होता है। अगर सही गणित लगाया जाए तो ज्योतिष का रिजल्ट सही आना चाहिए। और आगे चलके ये सारा ईश्वरीय ज्ञान ज्योतिष के गणित के नियमों के अनुसार सच्चा साबित हो जावेगा।
Baba: There are planets that play a true *(satwik)* role as well as there are planets that play a degraded *(tamasi)* role. Had it not been so, the influence of Jupiter would not have been considered to be always righteous. It cannot be said that now all the planets are *tamopradhan*, this is why the results given by astrologers cannot be so good. No. That is a kind of mathematics. Some mathematicians are clever and some are dull (in maths). If the calculations are made correctly, then the results given by the astrologers should be correct. And in future the entire knowledge of God will be proved to be true as per the rules of the calculations of astrology…..

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.